* ओ३म् *

वेदविरुद्धमतखण्डन

अयङ्ग्रन्थः श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीनिर्मि
तच्छिष्यभीमसेनशर्म्मकृतभाषानुवादसहितः

अजमेर नगरे
वैदिक यन्त्रालये मुद्रितः

संवत् २०५४ विक्रमीय.

बारहवींवार १०००	मूल्य : रु. १०-००

है कि—
विद्वानों
ये और
लेखक ने
भारत में
प्राधार
कें वा
ाल से ले कई
था।
: कि

पुस्तक मिलने का पता—

वैदिक-पुस्तकालय, अजमेर.

ओ३म्

वेद में पशु-हिंसा-विषयक

पाश्चात्य विद्वानों के लेखों की समालोचना

उपोद्घात

इस पुस्तक के लिखने की आवश्यकता का कारण यह है कि— जब गाय की रक्षा का आन्दोलन भारत में चला, कई विद्वानों ने अपना मत प्रकट किया, कई पत्रों में लेख लिखे गये और इस विषय पर लोकसभा में भी चर्चा हुई। एक लेखक ने ब्लिट्ज़ पत्र में भी इस विषय पर लिखा कि प्राचीन भारत में आर्य लोग गोमांस भक्षण करते थे। इन सब का मूल आधार पाश्चात्य विद्वानों के भाष्य और कई मध्यकाल की पुस्तकें वा तांत्रिक मतवालों के विचार थे। उधर बुद्ध के काल से पहले कई प्रकार के यज्ञ चल पड़े थे, जिनमें कुछ में पशुबध होने लगा था।

पाश्चात्य विद्वानों ने तो यहां तक लिख दिया था कि वेदों में भी ऐसा ही विधान है। उनके अनुयायी भारत के विद्वानों ने भी अपनी पुस्तकों में यही मत प्रकट किया है।- उन्होंने बिना वेदों को जाने उनका अनुकरण किया है। राजेन्द्र लाल मित्र ने अपनी पुस्तक में (Beef in Ancient, India, Intro duction. page 2) यह लिखा कि बृहदारण्यक उपनिषद् (६।४। १८) में लिखा है कि पति-पत्नी यदि चार वेदों में विद्वान

पुत्र उत्पन्न करना चाहें तो गोमांस खायें। उसने Hume के इस उपनिषद् के भाष्य को आधार किया था।

इसके पश्चात् पाण्डुरंग काणे ने अपनी पुस्तक History of Dharmashastra में मित्र के लेख के आधार पर वही लिखा। फिर मोजुमंदार सरीख ने अपनी पुस्तक Food and drinks में भी लिखा कि आर्य लोग गोमांस खाते थे। इसके पश्चात् ए० वी० शाह ने अपनी पुस्तक Cow-Slaughter – Horns of a Dilemma में इसी उपनिषद् का हवाला देकर लिखा कि आर्य लोग गोमांस खाते थे। पर इनमें से किसी भी लेखक ने सारी उपनिषद् को पढ़ने का कष्ट किया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता।

इस उपनिषद्वचन में जो तीन शब्द आए हैं वे ये हैं—मांसौदनं, औक्ष्ण, वार्षभेण वा। इनके ठीक अर्थ न जानकर इन विद्वानों ने अनर्थ किये हैं। हमने इस विषय को अपनी पुस्तक में स्पष्ट किया है। आधुनिक काल में भी डा० ओम् प्रकाश M.A. ने अपने Phd के Thesis में Food and drinks in Ancient India पर लेख लिखा, और वह ऊपर लिखे विद्वानों और पाश्चात्य लेखकों के आधार पर लेख लिखकर Phd बन गये। उन्होंने वेद मूलग्रन्थों को कभी पढ़ने का यत्न नहीं किया, और लिख दिया कि—"In Vedic India, beef and meat of various animals were in common use."

वात यह है कि इन विद्वानों ने स्वयं कभी वेद नहीं पढ़े और न उनके अर्थ ठीक जाने, केवल पाश्चात्य विद्वानों की नकल करते रहे। पहले पहल जब कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने भारत के प्राचीन ग्रन्थ पढ़े या उनके अंश पढ़े, तो वह उनकी प्रशंसा करने लगे।

१८६४ में परो मिचीबोट ने रामायण पढ़ी और लिखा—"It is a deep cup that gives drops of life and youth." जर्मन हुनबोलट ने गीता पढ़ी और लिखा—"Gita is perhaps the only true philosophical book, out of known literature." जर्मन कवि गेटे ने कालीदास के नाटक पढ़े और लिखा कि—"These works make an aproch in my life." हीडण तो गीता पढ़कर भारत का निवासी ही बन गया और गङ्गा के तट पर रहने लगा। Schophenheur ने उपनिषदों को पढ़ा और मोहित हो गये, और लिखा—'There is no study in the world as beneficial and elevating as that of the Upanishads.' अमरीकन Thorew ने मनु को पढ़ा और कहा—"I cannot read a single verse of this book without being elevated.' Emerson ने गीता पढ़ी और लिखा—"I bathe my intellect in the stupendous philosophy of Gita, every morning." ऐसे कई और भी पुरुष हुए, जो भारत की सभ्यता को सराहने लगे।

पर पीछे ऐसा काल आया जब ईसाई मिश्नरी विद्वानों और मैकाले जैसे नीतिज्ञों ने समझा कि यदि इस लहर को रोका न गया तो भारतीय न ईसाई बनेंगे और न हमारा राज्य स्थिर रहेगा। तदनुसार मैक्समूलर, वेनफी, ओल्डन वर्ग, बोव आदि ईसाई विद्वानों ने Mackaley से मिलकर एक योजना बनाई कि भारत के धर्मग्रन्थों और वेदों को दूषित किया जाये, भारत में ईसाई धर्म का प्रचार किया जावे। तदनुसार Max-Muller ने वेद का भाष्य करके लिखा कि—मैंने हिन्दुओं की आधार पुस्तक वेद पर ऐसा आक्रमण किया है कि यदि अब भी भारतीय ईसाई न बनें, तो इसमें मेरा दोष नहीं"

इस योजना का प्रभाव यह हुआ कि उस समय सारे पाश्चात्य विद्वानों ने वेद-मन्त्रों के अर्थ उलटे पुलटे किये, और उसके फलस्वरूप यह सब खेल खेला गया। पं० रामगोपाल जी शास्त्री वैद्य ने अपनी पुस्तक "वेद में आर्य-दास-युद्ध सम्बन्धी पाश्चात्य मत का खण्डन"[१] में इस योजना का पूर्ण विवरण देकर भारतवासियों को चेतावनी दी है कि उनके विष भरे लेखों को आधार न करो।

हमारे लिखने का तात्पर्य यह है कि इन पाश्चात्य विद्वानों और उनके पिट्ठू भारतीय लेखकों ने वेद के ठीक अर्थ को जाने बिना ही आरोप लगाये हैं, उनको आधार न करके इस विषय पर स्वतन्त्र विचार करना चाहिये।

हमारा प्रयत्न यही है कि इन निराधार आरोपों का उत्तर दिया जाये, और अपने भारतीय विद्वानों वा राजकर्मचारियों को ठीक ठीक अर्थ बताये जावें। तथा गाय के सम्बन्ध में जो प्राचीन वैदिक काल में विचार थे, वे बताये जावें।

---

१. यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पुस्तक रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत-हरयाणा) द्वारा प्रकाशित हुई है। प्रचारार्थ इसका मूल्य लागतमात्र ७५ पैसे रखा गया है।

प्रथम प्रकरण

क्या वेद-प्रतिपादित यज्ञों में पशुवध का विधान है ?

पाश्चात्य विद्वानों और उनकी विचारधारा के अनुयायी कुछ भारतीय लेखकों का मत है कि वेद में ऐसे यज्ञों का विधान है, जिनमें पशुवध करना लिखा है। यथा अश्वमेध यज्ञ में घोड़ा मारा जाता था, वैदिककाल में यज्ञों में पशुओं की हिंसा की जाती थी, और मांस की हवि देवताओं को दी जाती थी।

Macdonell और कीथ (Kieth) की लिखी हुई Vedic Index में (P.147 Vol. 2) पर लिखा है—

"The usual food of Vedic Indians, as far as flesh was concerned, can be gathered from the list of sacrificial victims. What man ate, he offered to gods i. e. sheep, goat and the ox."

फिर P. 145 पर—The eating of flesh appears as something quite regular in Vedic texts and that the ritual offerings cantemplate that gods will eat them and then the Brahmans will eat the remains."

Mr. Grifth also writes on P. 215 of his translation of Rigveda in his notes, 'The object of horse sacrifice to send the animal to the gods, so that he mav obtain wealth and other blessings for his srcrificers"..."and that the sacrificial horse is the symbol of the heavens."

(Page 219)

अपने मत की पुष्टि के लिए वे वेदों के जिन मन्त्रों को आधार करते हैं, वे ऋक् मं० १, सूक्त १६२-१६३ के मन्त्र हैं।

इन मन्त्रों को देने से पहले हम ऊपर के लेख का अनुवाद देते हैं—

"वैदिक काल के भारतीयों का मांस के सम्बन्ध में भोजन का पता उन जानवरों की सूची से चलता है, जो यज्ञ में मारे जाते थे। जो मनुष्य खाते हैं, वही देवताओं को बलि देते हैं, भैंस, भेड़, बकरी और बैल" (पृष्ठ २१७ वैदिक इण्डैक्स मैक्डोनेल और कीथ लिखित)। फिर पृष्ठ १४५ पर भी लिखा है कि "वेदों के मन्त्रों से पता लगता है कि वैदिक काल में मांस सर्वसाधारण का भोजन था। यज्ञ में बलि देने का अभिप्राय था कि जो देवताओं को भेंट करते थे—उनका बचा ब्राह्मण पीछे से खाते थे।"

ग्रीफिथ ने भी लिखा है कि—"अश्वमेघ में घोड़े के मारने का यह भाव था कि वह देवताओं के पास जाकर यजमान के लिये धन आदि उत्तम पदार्थ दिलायेगा" (पृ० २१५ नोट—ऋग्वेद भाष्य)। और पृष्ठ २१६ पर लिखा है कि "घोड़ा यज्ञ की बलि आकाश का चिह्न होता है।"

अब हम उन मन्त्रों को देते हैं जिन्हें इनके मत का आधार किया गया है, फिर उनकी आलोचना भी करेंगे—

ऋक् १।१६२।११ का वह मन्त्र इस प्रकार है—

यत् ते गात्रादग्निना पच्यमानादभि शूलं निहतस्याव धावति।
मा तद् भूम्यामा श्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु॥

इस मन्त्र का भाष्य ग्रिफिथ यह करता है—

"What from thy body, which with fire is roasted,

when thou art set upon the spit, distilleth, let not that lie on earth or grass neglected, but to the longling gods, all be offered."

अर्थात् तेरे शरीर से जब वह भूना जाता है, जब वह अग्नि में रखा जाता है, रस गिरता है—वह पृथिवी पर वा घास पर न गिरे और वृथा न जाय—वह सब देवताओं को जावे।

ऋक् १।१६२।१२ मन्त्र इस प्रकार है—

ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं य ईमाहुः सुरभिर्निर्हरेति।
ये चार्वतो मांसभिक्षामुपासत उतो तेषामभिगूर्तिर्न इन्वतु॥

इसका अर्थ ग्रीफिथ ने इस प्रकार किया है—

"They who observing that the horse is ready, call out and say—the smell is good, remove it, and craving meat await its distribution, may their approving help promote out labour."

अर्थात् जो देखकर कहते हैं कि घोड़ा तैयार और गन्ध बहुत अच्छी है—इसे अब हटाओ—और मांस की इच्छा से उसको बांटना चाहते हैं—उनकी पसन्द हमारे यज्ञ को सफल करे।

ऋक् १।१६२।१३ मन्त्र इस प्रकार है—

यन्नीक्षणं मांस्पचन्या उखाया या पात्राणि यूष्ण आसेचनानि।
उष्मण्यापिधाना चरूणा मङ्काः सूनाः परिभूषन्त्यश्वम्॥

अर्थ जो ग्रिफिथ ने किया है—

"The trial fork of the flesh cooking caldron, the vessels out of which the broth is sprinkled, warming

pots, the dishes, the hooks, the carving boards—all these attend the charger."

अर्थात् मांस पकाने के बरतन की कड़छी, पात्र जिसमें डाला जावे, गरम रखने के बर्तन, थालियां, कांटे, काटने के छुरे यह सब घोड़े के साथ होते हैं।

Max Muller ने भी लगभग ऐसा ही अर्थ किया है।

ये अर्थ उस मत की पुष्टि के लिए किए गए हैं, जिसका ऊपर वर्णन कर आए हैं। यह अशुद्ध अर्थ उन भावनाओं से प्रेरित होकर किये गए हैं, जिनके अन्दर वेद को दूषित करके और उससे घृणा पैदा करके धर्म में अश्रद्धा उत्पन्न की जा सके। इन पाश्चात्य विद्वानों का एक विचारबद्ध लक्ष्य होता है, और सब साधन उसकी पूर्ति के लिए किए जाते हैं। हमें चाहिए कि जनता को उनके जाल में फंसने न दें।

देखिये इन मन्त्रों के ठीक अर्थ हम देकर अपनी टिप्पणी करेंगे।

ऋक् १।१६२ का सूक्त अश्वमेध-परक है। अश्वमेध को ठीक न समझ कर अर्थों के करने में भ्रान्ति होती है। अश्वमेध में घोड़े की बलि देना नहीं है, परन्तु अश्व के कई अर्थ हैं। 'अश्व' राष्ट्र को भी कहते हैं। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—'राष्ट्रं वा अश्वमेधः' (१३।१।६।३); 'वीर्यं वा अश्वः' (२।१।४।२३)। अथर्ववेद (११।३।५) में आता है—अश्वाः कणाः—अर्थात् अन्न के कण अश्व हैं। ये मन्त्र यजुर्वेद में भी २५वें अध्याय में आते हैं। इन मन्त्रों के अर्थ स्वामी दयानन्द जी ने वहां पर ये दिए हैं (वे ठीक अर्थ हैं)—

"निश्चय से श्रम किये हुए तेरे तेज से पकाए जाते अङ्ग से

जो भाग बचकर चारों ओर से निकले, वह भूमि पर न आवे, वह घास तृण पर न आवे, परन्तु वह वृष्टियों और देवों को पहुंचे ।।

जो मनुष्य घोड़े के मांस की इच्छा करते हैं, और जो उस घोड़े को मारने योग्य कहते हैं, उनको दूर करो। और जो वेगवान् घोड़े को पका हुआ देखते हैं और उसकी सुगन्ध को लेते हैं, उनका उद्यम हम लोगों को प्राप्त हो (उनके अच्छे काम हमको प्राप्त हों) ।।

जो गर्मियों में उत्तम ढांपने और सींचने वाले पात्र, या जो मांस पकाने वाली बटलोई का निकृष्ट देखना, वा पात्रों के लक्षणा किये हुए प्रसिद्ध पदार्थ तथा बढ़ने वाले के घोड़ को सब ओर से सुशोभित करते हैं, वह सब स्वीकार हो ।"

इस प्रकार इन मन्त्रों में कहीं भी घोड़े के मांस से यज्ञ करने का विधान नहीं है। परन्तु घोड़े को मारने वा उसके मांस को खाने का निषेध है। ऐसे मनुष्य को दूर करने की आज्ञा है। वेद में कई मन्त्रों में घोड़े को मारने वा मांस खाने को पाप कहा है और दण्डनीय बताया है (आगे चलकर हम वेद-मन्त्र देंगे) ।

अब हम कुछ और मन्त्रों का वर्णन करके उन पर टिप्पणी करेंगे ।

ऋक् ४।१८।१३ मन्त्र इस प्रकार है—

अवर्त्या शुन आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम् ।

इस मन्त्र का अर्थ ग्रिफिथ ने यह किया है—

अर्थ—"In deep distress, I cooked a dog's intestines. I found not one among the gods to comfort me. I beheld my consert in degradation. Indra then brought Soma for me."

अर्थात् अत्यन्त दुःख के काल में मैंने कुत्ते का मांस पकाया। किसी देवता ने मेरी सहायता न की, मुझे सहारा न दिया। मैंने अपनी स्त्री को पतित देखा, फिर इन्द्र ने मुझे सोम लाकर दिया।

Wilson ने इस मन्त्र के बारे में लिखा है—

"This appears to be sage Vama Deva's excuse for having cooked and eaten dogs flesh in his utmost need."

"कि वामदेव ऋषि ने बड़ी तंगी की अवस्था में कुत्ते का मांस खाया।"

He also writes— "Vama Deva Sage knew well the right and wrong and was by no means rendered impure by eating the flesh of dogs for preservation of his life."

"कि उसने अपने जीवन की रक्षा के लिए कुत्ता का मांस खाया होगा, और उसके खाने से पतित नहीं हुआ।"

पर इन विद्वानों को वेद के शब्दों के ठीक अर्थ नहीं आते थे। वे उन शब्दों के लौकिक अर्थ करके अशुद्ध भाव कहा करते थे। इस मन्त्र का ठीक अर्थ यह है—

"जन्म मरण से छूटने के लिए उस सुखस्वरूप ईश्वर को ज्ञान के गुप्त साधनों से जानकर, और इन्द्रियों के सुख को परमसुख न मानकर कुत्ते जैसा लोभी जीव अपनी इन्द्रियों को अपने वश में करता है। जब उनसे वास्तविक सुख नहीं मिलता तो ईश्वर मुझे ज्ञान प्रदान करता है।"

भला ऐसे उत्तम अर्थ को न जानकर कितना अनर्थ किया है। पाश्चात्य विद्वानों ने मन्त्रों के केवल ऐसे अर्थ किए, जो उनके लक्ष्य को पूर्ण किया करते थे, उसी योजना को लेकर ऐसे अर्थ किए गये थे।

यही बात इस अगले मन्त्र ऋ० ६।१६।४७ से भी सिद्ध होती है। मन्त्र इस प्रकार है—

आ ते अग्न ऋचा हविर्हृदा तष्टं भरामसि।
ते ते भवन्तूक्षण ऋषभासो वशा उत॥

इस मन्त्र का अर्थ यह है—'हे अग्नि! हम तुझे अपने हृदय से हवि देते हैं। कृपया उसे स्वीकार करो, जैसे मनुष्य गाय और बैल लेकर प्रसन्न होता है।'

पर उन पाश्चात्य विद्वानों को तो इसमें भी गाय वा बैल का मारना ही दीखता है। चाहे यहां पर ऐसा वर्णन नहीं है, पर ग्रिफिथ फिर भी इसका अर्थ यह करते हैं—

"Agni, we bring thee with our hymns, oblations fashioned in the heart,. let these be oxen to thee, let these be bulls and kine to thee."

अर्थात् हे अग्नि हम तेरे लिये अपने हृदय में बने स्तोत्रों से तेरे गुण गाते हैं। यह बैल तेरे हों, यह गाय तेरी हों।

भाष्यकार का भाव है कि बैल वा गाय अग्नि का भोजन हैं। यह अनर्थ नहीं तो और क्या है?

एक और मन्त्र देखिये—

जायमानाभिजायते देवान् स ब्राह्मणान् वशा।
तस्माद् ब्रह्मभ्यो देयैषा तदाहुः स्वस्य गोपनम्॥

अथर्व. १२।४।१०॥

इस सूक्त का 'वशा' देवता है। वशा का अर्थ गाय भी है और पृथिवी भी। इस मन्त्र में ब्राह्मण को गाय वा पृथिवी देने का वर्णन है, पर मारने का नहीं है।

क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने वशा का अर्थ वेदवाणी किया है। इस मन्त्र का यह अर्थ है—

"इसलिए यह वशा=गाय देवताओं और ब्राह्मणों को देवे, ऐसा कहने से दाता अपनी रक्षा करता है।"

इसके अतिरिक्त अथर्ववेद १०।६।१०।१० सूक्त में बहुत मन्त्र वशा और शतौदनी गाय के सम्बन्ध में आते हैं। उनमें कहीं मारने का वर्णन नहीं है।

एक और मन्त्र है, जिसे पाश्चात्य विद्वान् अपना आधार बनाते हैं। वह ऋक् ८।४३।११ का मन्त्र इस प्रकार है —

उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे।
स्तोमैर्विधेमाग्नये ।।

ग्रिफिथ इस मन्त्र का अर्थ यह करता है—

"Let us serve Agni with our hymns—Disposer—fed on ox or cow, who bears the Soma on his back"

अर्थात् "अग्निदेव का स्तोत्रों से गुण गावें, वह विधाता है, उसकी पीठ पर सोम है, वह बैल वा गाय का भोजन करता है ।।"

पाश्चात्य विद्वान् उक्षान्न का अर्थ=बैल का मांस और वशान्न का अर्थ गोमांस करते हैं, परन्तु यह अज्ञानता है। वेद के शब्दों के अर्थों का समझना आवश्यक है।

ऋक् ६।४६।४ में शब्द गोभिः आता है, उसका अर्थ वहां पर 'दूध' है। सोम में दूध मिलाते हैं। इस अर्थ को स्वयं Vedic Index में P. 234 पर माना है—"milk and products of milk."

ऋक १०।६४।६ में गवि शब्द आता है, उसका अर्थ 'चमड़ा' है। स्वयं ग्रिफिथ ने इस मन्त्र का अर्थ करते समय यह अर्थ माना है, और hide अर्थ किया है।

ऋक् ६।७५।११ में गोभि: सन्नद्धा का अर्थ 'चर्म की रस्सी से बन्धा' है।

गोश्रीता और गवाशिरः शब्द ऋक् १।१३७।१ में आते हैं, वहां पर अर्थ 'दूध' का है। स्वयं ग्रिफिथ ने भी इसे माना है।

अब देखिए उक्षान्न में उक्षा' शब्द के अर्थ सोम हैं। यह बार बार मन्त्रों में आता है। यज्ञ में सोम से हवि दी जाती है, इस प्रकार सोम अग्नि का भोजन है।

इसी प्रकार वशान्न के अर्थ गाय से बने 'दूध घी' आदि पदार्थ हैं, जिनकी यज्ञ में हवि देते हैं।

मन्त्र के ठीक अर्थ यह हैं—

"हम अग्नि का स्तोत्रों द्वारा गायन करें, जिस अग्नि में सोमरस और घी की आहुतियां देते हैं, जिस अग्नि की पीठ पर सोमरस पड़ता है।"

सोमपृष्ठाय से अर्थ स्पष्ट होता है। यज्ञ में अग्नि की ज्वाला पर आहुति पड़ने से वह 'सोमपृष्ठ' सिद्ध है।

पाश्चात्य विद्वानों को वेद के अर्थ करने की शैली न जानने के कारण उन्हें अशुद्धार्थों का ही ज्ञान होता है, वे गहराई पर नहीं जाते।

●

द्वितीय प्रकरण

क्या वैदिक काल में आर्य मांस भक्षण करते थे ?

While mr. Max Muller and Griffith held that flesh of the sacrificial horse was a food, relished very much, Kieth writes—'Horse's flesh is probably not to be regarded as a trace of the use of the horse's flesh as a food, the aim of sacrifice was to import vigour to the gods' (P. 147) and mr. Oldenburg differs from both (P. 231).

In Vedic Index P. 145, we read, "Eating of flesh appears as something quite regular in Vedic texts. There is no trace of the doctrine of Ahinsa—abstaing from injury to animals."

इन लेखों का अनुवाद यह है—

'जबकि ग्रिफिथ और मैक्समूलर लिखते है कि यज्ञ के घोड़े का मांस बहुत स्वादु समझा जाता था। Kieth लिखता है कि यज्ञ में घोड़े के मांस की बलि देने का यह अभिप्राय नहीं है कि मांस खाया भी जाता हो। बलि देने का तात्पर्य देवताओं को प्रसन्न करना था। Oldenburg इन दो से सहमत नहीं है।' (P. 231)

वैदिक इन्डेक्स (P. 145) पर लिखा है कि 'मांस का खाना साधारण बात है जिसका वेद मन्त्रों में वर्णन है। अहिंसा का कहीं भी भाव नहीं पाया जाता।'

श्री राधाकुमद मुकरजी (लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति) लिखते हैं कि "वैदिकधर्म मांसपरक यज्ञों का विधान नहीं बताता, जहाँ पशु मारे जाते हों।

एक और कारण यह भी है कि जिससे मांसभक्षण का करना असम्भव होता है कि गाय, बैल, घोड़ा सब बहुत काम के जानवर हैं, जिससे उनका न मारना ही लाभदायक है।"

हम पाश्चात्य विद्वानों के मत की समालोचना करते हैं, जिससे स्पष्ट होगा कि उनके यह लेख अशुद्ध और निराधार हैं।

(क) यजुः २५।३५ में यह मन्त्र है—

ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं य ईमाहुः सुरभिर्निहरेति।
ये चार्वतो मांसभिक्षामुपासत उतो तेषामिगूर्तिर्न इन्वतु॥

इसका अर्थ यह है—'जो पुरुष घोड़े के मांस को खाने की चेष्टा करता है, वा घोड़े को मारता है, उसको नष्ट कर देना चाहिए।'

अथर्ववेद में एक मन्त्र आता है, जिसके अर्थ यह हैं कि 'जो मनुष्य गाय को निकम्मा समझकर उसका मांस घर में पकाता है, परमात्मा उस की सन्तान को भी भिखारी बना देता है।' एक और मन्त्र अथर्ववेद में है कि—"यदि कोई अपने घर में गाय का मांस पकाता है, चाहे यज्ञ के लिए अथवा खाने के लिए, उस दुष्ट को संसार से शीघ्र समाप्त कर देना चाहिये।"

(ख) वेदों में गाय के लिए बार बार 'अघ्न्या' शब्द आता है। ऋग्वेद में ही १६ बार आया है। इस शब्द के अर्थ सब कोषों में यही किये हैं कि 'न मारे जाने वाली'। M. Williams ने अपने कोष में भी यही अर्थ किये है—

श्री आप्टे ने भी गाय को अघ्न्या (not to be killed)

बताकर लिखा है कि 'बैल को अघ्न्य नहीं बताया'। पर यह भी उसकी भूल है, वेद में बैल को भी अघ्न्यः कहा है। गोमांस खाने के साथ इन उलटे लेखों का मेल नहीं हो सकता— विरोध है।

'यदि पशुवध करने से कोई स्वर्ग में जाता हो, तो फिर नरक में कौन जावेगा'। देखो महाभारत शा०प० २६३।६ ॥

(ग) अश्व शब्द के कई अर्थ हैं। यह शब्द 'अश' धातु से बनता है। 'अश' का अर्थ व्यापक होता है (श० ब्रा० १३।३। ८।८)। कहीं यह परमात्मा का वाचक है, कहीं राष्ट्र का (श० ब्रा० १३।२।८। ४, ५)। कहीं सूर्य का, स्वयं ऋ० १। १६३।१० में इसके अर्थ सूर्य के हैं, और ग्रीफिथ ने अपने भाष्य में (P. 218 पर) नोट में माना है। यह भी एक बड़ी हंसी की बात है कि ग्रिफिथ मंत्र के अर्थ कुछ और करता है और नोट में कुछ और लिखता है। इसका मतलब यह हुआ कि वह जानकर अशुद्ध अर्थ करता है। पाश्चात्य विद्वान् बिना प्रकरण को देखे अन्धाधुन्ध अर्थ करते हैं, इसीलिए उनकी भूल होती है। वह वैदिक शब्दों के प्रतीकवाद (Symbolism) को नहीं जानते। केवल शब्दों के लौकिक अर्थ करते हैं। यही कारण है कि उन्होंने नरमेध, अश्वमेध, गोमेध वा अजामेध को यथार्थ रूप में नहीं समझा, और इतना ही जाना कि इन यज्ञों में बैल वा अश्व वा गाय वा भेड़ की हिंसा होती है। हालांकि इन यज्ञों का भाव यह है ही नहीं। हम इनकी समालोचना फिर करेंगे।

(घ) Kieth का यह लिखना कि 'वेद में अहिंसा का सिद्धान्त नहीं पाया जाता' कितना निराधार है, यह एक छोटी

बुद्धि वा ज्ञान का मनुष्य भी 'वेद में बार बार हिंसा की निन्दा की है' से जान जाता है।

वेद में सर्वसाधारण के लिये सामान्य रूप से अहिंसा लिखी है। इसमें प्रमाण ये हैं—

यजु: १।१; १२।३२; १२।४२, ४४, ४८; १३।५०; १६।३; अथर्व० ११।२।१ ॥

अथर्व० १९।४८।५ में भी आता है कि 'पशु की रक्षा करो', और राजा को आज्ञा दी है कि वह इन पशुओं को न मारने दे। या तो कीथ ने वेद पढ़े ही नहीं या जान बूझकर ऐसा लिखा है। गाय को वेदों में पवित्र (sacred) माना गया है (अ० ८।१०।१। १५, १६) वा (अ० १०।१०; १२।४।५)। फिर यह कैसे हो सकता है कि वेद उसके मांस को खाने की आज्ञा देता ?

देखिये अथर्ववेद ६।७०।१ में क्या लिखा है—

> यथा मांसं यथा सुरा यथाक्षा अधिदेवने।
> यथा पुंसो वृषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः।
> एवा ते अघ्न्ये मनोऽधि वत्से निहन्यताम् ॥

अर्थ—जैसे मांस खाने में, जैसे शराब पीने पर, जैसे जुआ खेलने में, जैसे पुरुष का मन स्त्रियों के प्रेम में भर जाता है, गिर जाता है। ऐसे ही न मारी जाने वाली गाय वा बछड़े के मारने से मन पापी हो जाता है।

और देखिये इससे स्पष्ट क्या होगा ? ऋ० १०।८७।१६ मन्त्र में कहा है—

> यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते
> यो अश्व्येन पशुना यातुधानः ।

यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने
तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च ॥

अर्थ—जो पुरुष के मांस का सेवन करता है, या घोड़े का या अन्य पशु का मांस खाता है, या गाय को मार कर दूध से वञ्चित करता है, हे राजन् ! तू उसे सिर से काट दे।

पर पाश्चात्य विद्वान् यही अलापा करते हैं कि आर्य गोमांस खाया करते थे। वह सत्य झूठ की परवाह नहीं करते, केवल अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए सारे साधन वरता करते हैं।

नरमेध, अश्वमेध, गोमेध और अजामेध

वास्तव में इन विद्वानों की मूलभूत भूल इन यज्ञों के भाव न जानने से, अथवा जान बूझकर ठीक न करने से हुई है। इन यज्ञों में उनके मत के अनुसार पुरुष वा घोड़ा वा गाय वा भेड़ वकरी की भेंट की हवि देना है, और इसी नाम पर उनके सारे विचार निर्धारित हैं। इन यज्ञों का असली भाव पशुवध करना न था, और वेद में इसकी कहीं आज्ञा भी नहीं है। वह लिखते हैं—'What a man eats himself, he offers to gods.' अर्थात् जो मनुष्य खाता है, वह ही अपने देवता की भेंट करता है। इसीलिए उनका वैसा मत बना है, जो कि निराधार है। वे विद्वान् ईसाईमत प्रचारक की भावना को लेकर पक्षपात से ऐसे लेख लिखते हैं। वे वेद के मर्म को न जानकर वेद के मन्त्रों के अर्थ का अनर्थ करते हैं। उनका लक्ष्य वेद को दूसरे मतों के अनुयायियों की दृष्टि में गिराना था। उनका आदर्श वैदिक धर्म और संस्कृति पर आक्रमण करके लोगों को ईसाई बनाना था, उनके पत्रों से यह भाव स्पष्ट हो चुका है।

अब भारतीय पुरुषों को सावधान हो जाना चाहिए। वेद की प्रतिष्ठा कम करने का जो उनका यत्न है, उसे निष्फल करना चाहिये। देखिये इन यज्ञों का जो उद्देश्य था, वह वेद और अपने इतिहास से पता चलता है।

अश्वमेध, अजामेध, नरमेध आदि—पहले तो देखिये 'मेघ' के अर्थ। यह शब्द 'मेघ' धातु से बना है, और इसका अर्थ संगमनरूप प्रदर्शनी का है। महाभारत के अश्वमेध प्रकरण में यही भाव दिया है (८५-३२ से ३५ तक)। रामायण में भी अश्वमेध का वर्णन है, वहां पर अश्व के मारने का वर्णन नहीं। वहां राष्ट्र सम्बन्धी एक यज्ञ राम ने किया था, जिसमें घोड़ा सजाकर सारे राज्यों में फेरा गया था। और भी जहां जहां अजामेध का वर्णन आता है, वहां पर अजा मारने का नहीं। 'अजा' का अर्थ 'बकरा' नहीं, परन्तु अज चावल व बीज भी है। इसे राजा लोग कृषि की वृद्धि के लिए किया करते थे। श० ब्रा० में 'अश्व' का अर्थ—वीर्यं वा अश्वः (२।१।४।२३) और राष्ट्रं वा अश्वमेधः (१६।१।६।३) लिखा है। अतः यह यज्ञ भी राष्ट्र-सम्बन्धी है। राष्ट्र की उन्नति के लिये किया जाता था। गोमेध भी प्रदर्शनी के लिये होता था कि गाय वर्ग की उन्नति की जावे (महाभारत)। ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के पृष्ठ २४५ पर स्वामी दयानन्द जी यह लिखते हैं—"जो न्याय से प्रजा का पालन करता है वह ही क्षत्रिय का अश्वमेध कहाता है, किन्तु घोड़े को मारकर उसके अङ्गों का होम करना अश्वमेध नहीं है।"

पारसियों की पुस्तक Zend Avesta में भी गोमेध का वर्णन है, वहां पर भी गाय मारना नहीं लिखा। मेध में किसी पुरुष वा पशु का मारना नहीं होता था। उदाहरण के लिए देखिए

गृहमेध, पितृमेध आदि । गृहमेध में घर गिराना नहीं अपितु घर को स्वास्थ्यप्रद बनाना लक्ष्य था, और पितृमेध मे पिता का सत्कार अभीष्ट था, न कि पिता के मांस की हवि देना । नरमेध में भी आत्मा की उन्नति स्वरूप यज्ञ करते थे । इन सब यज्ञों की विधि को न जानकर उलटे सुलटे अर्थ किए गए हैं ।

यज्ञ का वेद में वार वार 'अध्वर' शब्द से वर्णन किया है, ऐसे मन्त्र कई हैं । 'अध्वर' शब्द के अर्थ हैं—ध्वरति हिंसाकर्म तदभावो यत्र सोऽध्वरः । इससे भीं यह सिद्ध हुआ कि यज्ञ= मेध में हिंसा न होती थी । मेध शब्द का अर्थ हिंसा करके यह मत चला है, परन्तु मेध के अर्थ अहिंसन वर्धन और संगतिकरण हैं, यही अर्थ करने योग्य भी है । गोमेध से गायों की वृद्धि-पालना (good breeding) आदि होते हैं, और प्रदर्शनी का यही लाभ होता है ।

अब यह स्पष्ट हो गया कि पाश्चात्य विद्वानों के वेद-सम्बन्धी सब आक्षेप निराधार अशुद्ध और मूर्खतापूर्ण हैं । यह हमारी सुस्ती है कि हमने उनकी इस चाल को न समझा, और उनके propaganda को चुपचाप देखते रहे; उनका उत्तर भी नहीं दिया ।

इस propaganda का बुरा प्रभाव हमारे कई विद्वानों पर पड़ा है, और वह भी उनके विष भरे लेखों से प्रभावित होकर अपने धर्म-ग्रन्थों को जाने विना ही उनकी नकल करते रहे हैं और पुस्तकें लिखते रहे, जिससे अशिक्षित जनता ने उन बातों को ठीक मान लिया । हमारा कर्तव्य है कि—अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा करें, और सचेत हो जावें और उनका उत्तर दें ।

तृतीय प्रकरण

क्या इन्द्र बैल वा भैंसों का भक्षण करता है ?

प्रो. मैकडानल अपनी पुस्तक 'वैदिक माईथालोजी' में इन्द्र के प्रकरण में लिखता है कि 'इन्द्र बैल का मांस खा जाता है। एक बैल का, २० बैलों का या १०० भैंसों का वा अग्नि में भुने ३०० भैंसों को खा जाता है, ऐसा वेद में आता है'। इस लेख की पुष्टि में वह ऋ० १०।२७।२; १०।२८,३; १०।८६।१४; ६।१७।११; ५।२६।७ को अपना आधार करता है।

वास्तव में इन मन्त्रों में कहीं भी बैल वा भैंसें खाने का वर्णन नहीं है। इन मन्त्रों के ठीक अर्थ न समझ कर वा न करके वह दूसरे पाश्चात्य विद्वानों की तरह वेद को कलंकित करने, और वेदों में हिन्दू जनता की श्रद्धा को नष्ट करने के उद्देश्य को लेकर गोमांस भक्षण को वेदानुकूल बताता है।

इसी लक्ष्य को लेकर ये सब इन मन्त्रों के अर्थ अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए करते रहे हैं।

'वैदिक इन्डेक्स' जो मैक्डोनल और कीथ ने लिखी है, उसमें भी लिखा है कि वैदिक काल में आर्य लोग गोमांस खाया करते थे। इन मन्त्रों के जो अर्थ ग्रिफिथ ने किए हैं, वे देते हैं—

(क) ऋ० १०।२७।२ मन्त्र इस प्रकार है—
अमा ते तुम्रं वृषभं पचानि तीव्रं सुतं पञ्चदश निषिञ्चम् ।

ग्रिफिथ इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार करते हैं—

"I prepare for thee a vigorous bull at home and pour fifteen fold strong juices."

अर्थ—मैं तेरे लिए एक शक्तिशाली बैल भोजन के लिये तैयार करता हूं, और तेज रस १५ बार उडेलता हूं।

परन्तु इस मन्त्र का ठीक अर्थ यह है—'हे इन्द्र! मैं तेरे लिए सोम के मोटे डण्ठलों का पकाता हू, और पञ्चदश सोम के तीव्र रस को सींचता हूं"।

(ख) ऋ० १०।२८।३ मन्त्र यह है—

अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्र तूयान् त्सुन्वन्ति सोमान पिबसि त्वमेषाम्। पचन्ति ते वृषभां अत्सि तेषां पृक्षेण यन् मघवन् हूयमानः॥

ग्रिफिथ इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार करते हैं—

"Men with the stone press out for thee, O Indra, strong gladdening Soma and there of thou drinkest. Bulls they dress for thee and of these, thou eatest when, Maghawan, with food thou are invited."

अर्थ—हे इन्द्र! मनुष्य तेरे लिये पत्थरों से तीव्र सुख-दायक सोमरस निकालते हैं, और तू उसे पीता है। और हे मघवन्! जब वे तुझे भोजन के लिए आह्वान करते हैं, तब वे तेरे लिए बैल पकाते हैं, और तू उसे खाता है।

यह अर्थ भी अशुद्ध है। इस मन्त्र का ठीक अर्थ यह है—'हे इन्द्र! अन्न की कामना से जब हम तेरा आह्वान करते हैं, उस समय यजमान शीघ्र ही पत्थरों से कूटकर सोमरस

बनाता है, और तू उसको पीता है। और जब तेरे लिये सोम के डण्ठलों को पकाता है, तू उसे खाता है'।

(ग) ऋ० १०।८६।३ मन्त्र इस प्रकार है—

उक्ष्णो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंशतिम्।
उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥

ग्रिफिथ इस मन्त्र का अर्थ यह करते है—

"Fifteen in number, then for me, a score of bulls they prepare and I davour the fat there of, they fill my belly with food. Supreme is Indra, over all.

अर्थ—तब वह मेरे लिए १५ बैलों को पकाते हैं, और उनका मांस भी खा जाता हूं। मेरा पेट भर देते हैं, मैं इन्द्र सबसे बड़ा हूं।

इस मन्त्र का यह अर्थ ठीक नहीं। हम इस मन्त्र का शुद्ध अर्थ नीचे देते हैं—

'मेरे लिये यजमान १५ वा २० डण्ठलों को पकाते हैं, और मैं उनको खाता हूं, और मेरा पेट भर देते हैं। दोनों कोख भर जाती हैं, मैं इन्द्र सबसे महान् हूं।'

टिप्पणी—इन तीनों मन्त्रों में दो शब्द आते हैं। पहले दो में 'वृषभ' है और तीसरे में 'उक्षन्' है। जिनके ठीक अर्थ न जान कर पाश्चात्य विद्वानों ने भूल की है। वृषभ के अर्थ—सोम का अंशु है, और उक्षन् वा उक्षा का अर्थ भी सोम का अंशु हैं।

यहां पर प्रकरण सोम का है। वेदों के और कई मन्त्रों में भी वृषभ का अर्थ सोम आया है। देखो ऋ० ६।२।६; ६।७१।७; ६।६६।७ और ६।१०८।११ में भी वृषभ वा वृषा

का अर्थ सोम ही है। इसी प्रकार उक्षा शब्द का अर्थ भी सोम कई मन्त्रों में आता है। यास्काचार्य ने निरुक्त में इस मन्त्र का अर्थ करते हुए लिखा है (१२।६)—"असत इन्द्र उक्षण:" 'उक्षण:' का अर्थ वह ओस के कण करता है। इन्द्र विद्युत् को कहते हैं। इन्द्र मेघों को खा जाता है, और वर्षा करता है। वहां पर उक्षा का अर्थ बादल है।

इससे यह स्पष्ट है कि पाश्चात्य विद्वानों की कल्पना निराधार है।

अब भैंसों को लीजिए—इसके बारे में दो मन्त्रों को आधार करके मैक्डोनल ने यह लिखा कि 'इन्द्र ने एक सौ तथा तीन सौ भैंसों का मांस अग्नि में भुना हुआ खाया था'। वे मन्त्र ऋ० ५।२६।७; ६।१७।११ हैं। ऋ० ५।२६।७ मन्त्र इस प्रकार है—

सखा सख्ये अपचत् तूयमग्निरस्य क्रत्वा महिषा त्रीशतानि।
त्री साकमिन्द्रो मनुषः सरांसि सुतं पिबत् वृत्रहत्याय सोमम्॥

ग्रिफिथ का अर्थ—"As a friend to aid a friend, Agni dressed quickly 300 buffaloes even as he willed it, and Indra, from man's gift, for Vritra's slaughter, drank off, at once 3 lakes of pressed out Soma."

अर्थात् जैसे एक मित्र दूसरे मित्र की सहायता करता है, इसी प्रकार अग्नि ने शीघ्र ३०० भैंसों को भूना, और इन्द्र ने वृत्र को मारने के लिए सोमरस की तीन झीलें पी लीं, जो यजमान ने दीं थी।

प्रकरण के अनुसार इस मन्त्र का ठीक अर्थ यह है—'अग्नि ने अपने सखा इन्द्र के लिए शीघ्र ३०० बादलों को तैयार

क्रिया। इन्द्र ने वृत्र को मारने के लिए तीन पात्रों के सोम को पी लिया'।

टिप्पणी—अब देखिये यहां पर अग्नि सूर्य का वाचक है, और इन्द्र विद्युत् का, वृत्र वर्षा को रोकता है। सूर्य के ताप से वा शक्ति से बादल बनते हैं, और विद्युत उन से वर्षा करता है वर्षा के पश्चात् बादल समाप्त हो जाते हैं।

इस भौतिक घटना को इस मन्त्र में दर्शाया है। पर इसको न जानकर अशुद्ध अर्थ करके एक निराधार कल्पना करली, और लिख दिया कि 'इन्द्र ने ३०० भैंसें खा लीं'।

इस प्रकार 'झील' अर्थ करना भी अशुद्ध है। स्वयं ग्रिफिथ अपने नोट में ही मानते हैं कि 'तीन झील' तीन बड़े वर्तन हैं। एक आलंकारिक वर्णन को न जानकर उनको यह भूल हुई है।

अब लीजिए अगला मन्त्र—ऋ० ६।१७।११, जो इस प्रकार है—

वर्धान यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषां इन्द्र तुभ्यम्।
पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन् वृत्रहणं मदिरमंशुमस्मै॥

ग्रिफिथ का अर्थ—"He dressed a hundred buffaloes, Oh Indra, for thee, whom all accondant Maruts strengthened. Pushan, Vishnu poured forth 3 great vessels to him, the juice that cheers him up to slaughter Vritra."

वे स्वयं नीचे नोट में लिखते हैं—"He means Agni—3 great vessels—literally lakes.

टिप्पणी—इन दोनों मन्त्रों में 'महिष' शब्द आया है। यहां पर महिष का अर्थ भैंस नहीं, अपितु मेघ (बादल) है।

इस सूक्त में प्रकरण वर्षा का है। पूषन और विष्णु दोनों सूर्य की रश्मियां हैं, जो बादल बनाती हैं, जो बादल काले हैं, उनको 'महिष' कहा है। स्वयं ग्रिफिथ अपने भाष्य के पृष्ठ २१५ पर महिष के अर्थ नोट में 'काले बादल' करता है। अतः भैंसों के खाने का अर्थ अशुद्ध है, और यह दोष भी निराधार है। भक्षण करना अलंकारिक वर्णन है। समाप्त हो जाना अर्थ है। वर्षा के पश्चात् बादल खतम हो जाते हैं।

इस मन्त्र का ठीक अर्थ यह है—"हे इन्द्र! सारे मरुत समान लक्ष लेकर स्तोत्रों से तेरा गायन करते हैं। पूषा और विष्णु काले मेघ बनाकर इन्द्र को देते हैं, और वह सोम के तीन बर्तन पीकर वृत्र का हनन करता है, और वर्षा होकर बादल समाप्त हो जाते हैं।

इन अर्थों की पुष्टि निरुक्त से होती है। १२।१८ में यास्क ने विष्णु का अर्थ आदित्य किया है। और १२।१६ में पूषा का अर्थ सूर्य भी एक अवस्था बताया है। सायण ने भी महिष का अर्थ 'मेघ' किया है।

एक और मन्त्र ऋ० ८।१२.८ में भी महिष का अर्थ मेघ आता है—

यदि प्रवृद्ध सत्पते सहस्रं महिषां अघः।

अर्थात्—हे इन्द्र! तूने सहस्रों मेघों को खाया है।

यहां पर स्वयं ग्रिफिथ नोट में लिखता है—

"The buffalo is the dark cloud which Indra pierces with his lightening." P. 133 Vol. 2.

अर्थात् महिष काले बादल हैं, जिन को विद्युत् बिजली भेदन करती है। केवल यहां पर ही नहीं, अपितु एक और

मन्त्र भी है, जिस में महिष शब्द इसी अर्थ में आता है। वह ऋ० ८।६९।१५ मन्त्र इस प्रकार है—

अर्भको न कुमारकोऽधि तिष्ठन् नवं रथम्।
स पक्षन्महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्रतुम्॥

इस का अर्थ यह है—'अल्पशरीर कुमार की भांति इन्द्र रथ पर बैठता है, और माता पृथिवी और पिता द्युलोक की उन्नति के लिये इधर उधर भागते हुए बादलों को मृग की नाईं मारता है।'

इस का अर्थ करते हुए सायण ने भी लिखा है—'मृगवदितस्ततो धावन्तं.........मेघं पचति'।

ऋ० १०।१२३।४ का अर्थ करते हुए सायण लिखता है—'मृगस्य अन्वेषणीयस्य..... महिषस्य महतो वेनस्य.........मेघस्य शब्दम् हि रमन्।' अर्थात् भैंस का घोषणा का अर्थ है—'मेघ का शब्द करना'।

इसी प्रकार ऋ० ८।७७।१० में महिष और वराह दोनों मेघों के नाम हैं। मन्त्र यह है—

शतं महिषान् क्षीर पाकमोदनं वराहमिन्द्र एमुषम्।

इस मन्त्र में भी मेघों का वर्णन है। इस मन्त्र का अर्थ ग्रिफिथ यह करता है—

'A hundred buffaloes and a brew of rice and milk and ravening boar—Indra slew'.

अर्थ—'इन्द्र ने १०० भैंसों को और बोलते हुए सूअर को और दूध चावल के ढेर को समाप्त कर दिया।'

नोट में नीचे वह मानता है कि महिष काले बादल हैं, और

चावल दूध वर्षा के वाचक हैं, और वराह का अर्थ वृत्र है (See note P. 226 vol. 2.)। इससे भी अधिक वलकारी यह वात है कि स्वयं Macdonell इस को मानता है (See Royal Asiatik Society journal 1895. P. 186) परन्तु पाश्चात्य विद्वानों की अज्ञान की सीमा यहां तक है कि Vedic Index में Kieth and Macdonell महिष का अर्थ वही भैंस ही करते हैं—'एक शक्ति शाली पशु'। जब कि वैदिक मन्त्रों में शब्दों के लौकिक अर्थ नहीं लगते।

'वराह' के अर्थ में भी यही भूल है, पर वहां ग्रिफिथ के नाई वह भी ravening boar के अर्थ Varitra करता है, तो वात स्पष्ट है कि इन विद्वानों ने जान बूझ कर अशुद्ध अर्थ करके वेद पर एक निराधार दोष लगाया है।

यास्क ५।४ में और निघण्टु १।१० में वराह का अर्थ मेघ करते हैं।

चतुर्थ प्रकरण

क्या विवाह के समय गाय मारी जाती थी ?

In Vedic Index by Macdonell and Kieth (P. 145), it is alleged that 'marriage ceremony was accompanied by slaying of ox or a cow, clearly for food.'

Mr. Clayton also writes in his book, 'Rigveda and Vedic religion', that "the guests were served with beef, Cow was got killed on the occasion of the marriage."

मैक्डोलन और कीथ अपनी पुस्तक 'वैदिक कोष में' पृ० १४५ पर लिखते हैं कि—"विवाह के समय गाय मारी जाती थी या बैल। स्पष्ट है कि भक्षण के लिये"।

क्लेटन महाशय भी अपनी पुस्तक 'ऋग्वेद और वैदिक धर्म' में लिखते हैं कि—'अतिथि को गोमांस खिलाते थे। विवाह के समय गाय मारी जाती थी।'

इन लेखों के लिए वे जिन मन्त्रों को आधार बनाते हैं। हम उन पर विचार करेंगे।

ऋ० १०।८५।१३ का मन्त्र इस प्रकार है—

सूर्याया वहतुः प्रागात् सविता यमवा सृजत्।
अघासु हन्यन्ते गावोऽर्जुन्योः पर्युह्यते ॥

इस मन्त्र का अर्थ ग्रिफिथ इस प्रकार करता है—

"The bridal pomp of Surya which Savita started,

moved along, in Magh days oxen are slain, and in Arjuni, they wed the bride."

अर्थ—"सविता ने सूर्या के विवाह पर बहुत धूमधाम की, माघ में बैल मारा गया, और अर्जुनी में विवाह हुआ।"

नीचे अपने नोट में यह लिखता है—

"Oxen were slain on special festive occasions—for instance wedding."

अर्थ—"बहुत खुशी के अवसर पर बैल मारते थे, जैसे विवाह"।

टिप्पणी—देखिये यह अर्थ कहा जावे वा अनर्थ ? वेद-मन्त्रों के शब्दों के ठीक अर्थ करने की शैली इन पाश्चात्य विद्वानों को नहीं आती, तभी तो ऐसे अशुद्ध अर्थ करते हैं।

इस मन्त्र का शुद्ध अर्थ यह है—

'सविता ने सूर्या को दहेज धूमधाम मे भेजा। माघ मास में गाय भेजी, फाल्गुन में विवाह किया'।

Dr. Wilson ने भी इस का अर्थ करते हुए लिखा है— "Cow were whipped along in magha अर्थात् "गाय चलायी जाती है मघा में"। परन्तु ग्रिफिथ और Hevett आदि टीका-कारों की उक्त बड़ी भूल है।

इस मन्त्र में 'हन्यते' शब्द आता है। यह शब्द हन् धातु से बना है। हन् का अर्थ पाणिनि ने 'हिंसा वा गति' लिखा है। कोष में भी इसके अर्थ हैं—वध करना, गुणा करना, जाना, ताड़न करना। निघण्टु २।१४ में भी इसका गति अर्थ दिया है। यही शब्द बिगड़ कर आजकल की बोली में हांकना बन गया है।

बात यह है कि कन्या पक्ष वाले वर पक्ष के घर विवाह से पहले गाय दहेज में भेजा करते थे।

एक और मन्त्र है ऋ० ४।५८।९, जिस पर उनका आधार है। वह इस प्रकार है—

> कन्या इव वहतु मेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि ।
> यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभितत् पवन्ते ।।

इस मन्त्र का का अर्थ करते हुए श्री वी० एम० आप्टे, जो Vedic Age के लेखक हैं लिखते हैं कि इस मन्त्र में Marriage feast अथवा विवाह के समय का भोज है जिसमें बैल के मांस का भोजन कराया जाता था (P. 389)। कितने दुःख की बात है कि जिस मन्त्र का अर्थ स्वयं पाश्चात्य विद्वान् भी marriage feast नहीं करते, यह उनका अनुयायी भारतीय उनसे भी आगे जाता है। वह एक स्थान पर लिखता है कि 'गाय' को वेद में अघ्न्या लिखा है, पर बैल को नहीं लिखा, इसलिये बैल मारे जाते थे। यह कितनी भूल की बात है। अथर्ववेद ९।४ ३·८ में बैल को भी अघ्न्यः लिखा है। वह अज्ञानवश ऐसा लिखकर वेद की निन्दा करता है। इस मन्त्र में कोई भी ऐसा शब्द नहीं, जिस का अर्थ marriage feast किये जावें।

क्या वेद में अतिथि-सत्कार में गोमांस देना लिखा है?

पाश्चात्य विद्वान् एक और वेदनिन्दक बात लिखते हैं कि—'वेद में अतिथियों का सत्कार गोमांस से किया जाता है' ऐसा लिखा है, परन्तु वह भी निराधार है।

पाश्चात्य विद्वान् लिखते हैं कि "Guests were entertained with beef, so a guest, was considered a Cow-killer."

अर्थ—'अतिथि सेवा गोमांस से करते थे, अतः अतिथि को 'गोघ्न' कहा जाता है।

कई भारतीय भी यह मानने लगे कि वेद ऐसा कहता है। दिसम्बर १९६६ के 'बलियज्ञ' पत्रिका में एक लेख छपा था। जिसमें यह भी लिखा था कि—'Vedic Indians served beef to honoured guests' अर्थात् वैदिक काल में भारतीय अतिथि सेवा गोमांस से किया करते थे।

इसका कारण यह है कि वेद-मन्त्रों के ठीक अर्थ न जान कर ये लेखक ऐसा लिखते हैं। उनका आधार अथर्ववेद के अतिथि सूक्त के मन्त्रों पर है और ऋग्वेद के १।११४।१०, वा १०।६८।३ पर है।

इसका हवाला देकर Colebrooke महाशय अपने लेख Religious Ceremonies of the Hindus में लिखता है:—It seems to have been an ancient custom to slay a cow on the occasion of the reception of a guest and the guest was therefore called a cow-killer.

अर्थात् ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक काल में यह पुरानी प्रथा थी कि अतिथि की सेवा गोमांस से की जाती थी, और अतिथि को गाय का मारने वाला कहा है।

Macdonell and Kieth भी अपनी पुस्तक वैदिक इण्डेक्स (P. 145) मांस के प्रकरण में लिखते हैं कि 'The name Atithigwa probably means slaying cow for guests' और शब्द Atithi Nirgah का अर्थ Cows fit for guests करते हैं। यह शब्द ऋ० १०।६८।३ में आता है।

अब हम उन मन्त्रों की समालोचना करते हैं, जिन पर आधार किया गया है—

ऋ० १०।६८।१० का मन्त्र इस प्रकार है—

साध्वर्या अतिथिनीरिषिराः
स्पार्हाः सुवर्णा अनवद्यरूपाः।
बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो वितूर्या
निर्गा ऊपे यवमिव स्थिविभ्यः ॥

इस मन्त्र का अर्थ Wilson ने यह किया है—

"After extricating them from the mountains, Brihaspati brings the cows to the gods Cows are yielder of milk, ever in motion, the objects of search and disire, well coloured and of unexceptionable form as men bring barley from the granaries.

'ग्रिफिथ' इसका अर्थ इस प्रकार करते हैं—

Brihaspti having won the cows from the mountains, strewed down, like barley from the winnowing baskets, the wandering cows who aid the pious, desired of all, of blameless form and well coloured.

देखिये इन दोनों अर्थों में कोई भी Colebrooke वा Kieth की पुष्टि नहीं करते। इस मन्त्र में शब्द अतिथिः निर्गाः आता है। इसका अर्थ है 'अतिथि के योग्य गाय' न कि अतिथि के लिए गाय मारना। अतिथिग्व शब्द का अर्थ भी यह है—'जो अतिथि को गाय देता है वा दान करता है'। न जाने वे पाश्चात्य विद्वान् ऐसे अशुद्ध अर्थ क्यों करते हैं ?

ऋ० १।११४।१० का मन्त्र इस प्रकार है—

आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं
क्षयद्वीर सुम्नमस्मे ते अस्तु।

मृला च नो अधि च ब्रूहि
देवा धा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः ॥

ग्रिफिथ ने इस मन्त्र का अर्थ यह किया है—

"Far be thy dart that kills men or cattle. Thy bless be with us oh Lord of Heroes! Be gracious unto us, Oh God, and bless us and vouchsafe us doubly strong production".

यहां पर गोघ्न शब्द आता है, और उसका अर्थ गाय को मारने वाला किया है। इसी प्रकार वह और स्थानों पर भी ऐसा ही करते हैं, पर प्रकरण में जो विषय है उनके अनुसार जहां जो अर्थ लगना उचित हो वह लगाये जावें।

अथर्ववेद में अतिथि सूक्त ९।६(४)७ का एक मन्त्र इस प्रकार है—

स एव विद्वान् मांसमुपसिच्योपहरति ।

इसमें 'मांस' शब्द आता है। मांस का अर्थ यास्क ने निरुक्त में 'स्वादु भोजन' किया है, जो मन को अच्छा लगे।

इसी प्रकार अ० ९।६(३) ९ में एक मन्त्र आता है—

एतद् वा उ स्वादीयो यदधिगवं
क्षीरं वा मांसं वा तदेव चाश्नीयात् ।

इसका अर्थ Wilson ने यह किया है—

"The host should not use cow's milk and beef before his guest is served."

इस में दो शब्द आते हैं—अधिगवम्, मांसम्। ये शब्द समझने योग्य हैं। इन के ठीक अर्थों को न जान कर सारी भूल

हुई हैं। अघिगवं का अर्थ है जीवित गाय। मांसं के अर्थ यास्क ने निरुक्त ४।३।२ में यह बताये हैं—मांसं माननं वा मानसं वा मनोऽस्मिन् सीदतीति वा। अर्थात् वह भोजन जो मन को स्वादु लगे। इस का अर्थ फलों का रस वा गूदा भी है। इस लिए अधिगवम्, मांसम् के अर्थ यह हुये—'जीवित गाय के दूध से बने स्वादु पदार्थ घी मलाई आदि'। यह बात असम्भव है कि जीवित गाय का गोश्त खाया जावे।

यदि जब जब कोई अतिथि विद्वान् साधु-सन्त घर आवे, और उसके लिए गाय का वध का किया जावे, तो देश में न जाने कितनी गाय मारनी पड़ें। तो घर क्या हुआ, एक बूचड़-खाना हुआ।

गोघ्न अतिथि

इस शब्द का अर्थ करने में भी पाश्चात्य विद्वानों ने बड़ी भूल की है। आप्टे महाशय नें भी उनकी बात मान कर अपनी पुस्तक Vedic Age में इस का अर्थ 'guest is a cow killer' किये हैं। अभिप्राय यह है कि 'अतिथि को गोमांस का भोजन दिया जाता था, और यह वेद की आज्ञा है'।

अब देखिये 'गोघ्न' शब्द के ठीक अर्थ। यह शब्द गो और हन् से बना है। गो के अर्थ—गाय, पृथिवी, वाक्, किरण, इन्द्रियां वा दूध भी हैं। स्वयं कीथ ने भी अपनी Vedic Index में गो का अर्थ दूध भी बताया है। (P. २३४)—'products such as milk'। हन् का निघण्टु में २-१४ में 'गति अर्थ' किया है। 'गति' से प्राचीन आचार्य ज्ञान, गमन और प्राप्ति अर्थ स्वीकार करते हैं।

हन् धातु का अर्थ यास्क ने निरुक्त में 'गति, गमन ज्ञान' किये हैं, और 'हनन' भी किया है। इसी प्रकार पाणिनि जी ने भी हन् का अर्थ 'हिंसा, गति, ज्ञान, गमन, प्राप्ति' किये हैं। 'गोघ्न' का अर्थ वेद में यह है कि वह अतिथि जिसकी सेवा दुग्ध से की जावे'—गौः पयो हन्यते प्राप्यते यस्मै", for whom milk is served.

पाश्चात्य विद्वान् तो किसी लक्ष्य को रख कर अशुद्ध अर्थ करते हैं। इस से अधिक प्रमाण क्या होगा कि ऋ० ६ ७५ १४ में शब्द 'हस्तघ्न' आता है वहां पर स्वयं M Williams ने हस्तघ्न का अर्थ 'हाथ ग्रहण करने वाला' किया है। (See P. 1295 Sanskrit Dictionary)

इस मन्त्र का अर्थ करके to protect the hand from the striking bow.' कि कमान से हाथ को बचाने के लिये, वहाँ पर हाथ काटना अर्थ नहीं किया गया है।

इससे स्पष्ट है कि 'गोघ्न' का अर्थ गाय मारना नहीं है।

पञ्चम प्रकरण

क्या दाह संस्कार में शव को मांस से ढका जाना वेद में लिखा है ?

ऋ० १०।१६ ४, ७ के दो मन्त्र दाह संस्कार के प्रकरण में आते हैं। जिनके अर्थ ग्रिफिथ महाशय ने अपने ऋग्वेद के भाष्य में किये हैं। हम वे मन्त्र और उनके अर्थ यहां देते हैं—

अजो भागस्तपसा तं तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चिः।
यास्ते शिवास्तन्वो जातवेदस्ताभि वहैनं सुकृतामु लोकम् ॥
ऋ० १०।१६।४ ॥

अर्थ—"Thy portion is the goat, with heat consume him, let thy fierce flames the growing splandour burn him up, with thy auspicious forms, Oh Jatveda Agni, bear this man to the region of the pious,"

अर्थात्—'हे जातवेद अग्नि, तेरे हिस्से में भेड़ आयी है, तू इसे जला दे। तेरी गरमी तेरी तपत तेरा तेज इसे जलावे। तू मृतक को देवताओं के समीप लेजा।'

अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व पीवसा मेदसा च।
नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हृषाणो दधृग्विधक्ष्यन् पर्यङ्खयाते ॥
ऋ० १०।१६।७॥

ग्रिफिथ का अर्थ—

"Shield thee with flesh against the flames of fire,

encompass thee with fat and marrow, so will Agni fail to consume thee."

अर्थात्—'इस शव को भेड़ के मांस से ढक दे। इसे सब ओर से लपेट दे कि अग्नि इसे वखेर न दे, समाप्त न करा दे। इसके ऊपर चर्बी और मांस रख दे कि अग्नि इसे पूर्णतया खतम न कर दे।'

पाश्चात्य विद्वानों का यह मत है कि दाह के समय गाय या भेड़ मारी जाती थी, और उसका मांस वा चर्बी शव के ऊपर रख कर दाह किया जाता था। ग्रिफिथ अपने भाष्य में नीचे नोट में भी ऐसा ही लिखते हैं—

"A goat was slaughtered and laid limb by limb on the corpse. The flesh was placed on the corpse to prevent too quihk and complete cremation,"

अर्थात्—'शव के ऊपर भेड़ का मांस रखते थे कि शव झटपट न जल कर खतम हो जावे'।

पाश्चात्य विद्वानों की नकल करने वाले कुछ भारतीय विद्वान् भी ऐसा ही लिखते हैं। श्री राजेन्द्र लाल मित्र ने अपनी पुस्तक Beef eating in ancient India में p. 2 पर लिखा है—

"A supply of beef was deemed absolutely necessary by pious Hindus in their journey from this world to another world, and a cow was invariably killed to be burnt with the dead."

अर्थात्—'हिन्दु इस दुनिया से अगली दुनिया में जाते समय भी गाय का मारना आवश्यक समझते थे, और दाह में शव के साथ गाय को मार कर साथ ही जलाया जाता था।'

Keith ने भी लिखा है (Vedic Index II P 147)

"A ritual of cremation of the dead required the slaughter of a cow as an essential part. the flesh being used to envelope the dead body"

हमें तो इन विद्वानों की ऐसी बातों पर हंसी आती है कि किसी के मरने पर साथ में जानवर को भी मारा जाता था। भला यह मूर्खता का अर्थ है कि नहीं? ये लोग वेद के शब्दों के ठीक अर्थ न जानकर उस पर ऐसे दोष लगाते हैं।

इस मन्त्र का ठीक अर्थ हम नीचे दे रहे हैं—

ऋ० १०।१६।४—'हे अग्नि! तू इस अजन्मा जीव को अपने जलाने के धर्म से ऊपर को प्रेरणा कर और अपने तेज तप और ज्वाला से शव को भली प्रकार जला। तू इस जीव को अगले जन्म के लिये ले जा'। (यह अग्नि परमात्मा है जो कर्मों का फल देता है, और आगे जन्म देता है।)

इस मन्त्र में 'अज' शब्द आया है, जिसका अर्थ यहां पर 'भेड़' नहीं है, अपितु अजन्मा आत्मा है, जो इस शरीर को छोड़कर गया है।

ऋ० १०।१६।७—पं० प्रियरत्न आर्ष (स्वामी ब्रह्ममुनि) नेइस मन्त्र का अर्थ यह किया है—'अग्नि इस शव की इन्द्रियों को, शरीर की चर्बी को भली प्रकार जलाये, इतनी अधिक तेज अग्नि न हो कि शव के अङ्गों को इधर-उधर बिखेर दे, और शव के मांस चर्बी मेदा आदि को जलाती हुई अग्नि अति तीक्ष्ण न हो।

इस मन्त्र में गोभिः शब्द आया है जो बहुवचन है। इसलिए एक शव के लिये कई गायों को मारना चाहिये, यदि यहां पर गाय मारना अर्थ हो।

परन्तु ऐसा बुद्धि नहीं मानती, इसलिये गोभिः का अर्थ घी आदि पदार्थ हैं, जो दाह के समय में डाले जाते हैं। गौ से घी आदि पदार्थ मिलते हैं, जो अग्नि में डालने से वायु को शुद्ध करते हैं।

इन दोनों से पाश्चात्य विद्वानों का मत सिद्ध नहीं होता, यह कल्पना मात्र है। किसी काल में भी ऐसी प्रथा न थी।

एक और बात ध्यान देने वाली है कि ऋ० १०।१६ ४ में अज शब्द आता है। वहां भी अर्थ 'गाय' किसी प्रकार भी नहीं होता, फिर कीथ आदि का ऐसा लिखना निराधार है।

मन्त्रों के ऐसे अर्थ करने का पाश्चात्य विद्वानों का एक लक्ष्य है। वे विद्वान पहले एक योजना बनाकर फिर उसको सब प्रकार से उचित हो वा अनुचित, ठीक सिद्ध करने का लक्ष्य बना लेते हैं। उनका लक्ष्य था कि--'वेद पर दोष लगा कर इसे और जातियों की दृष्टि में गिराया जावे फिर उन्हें ईसाई बनाना आसान हो जायेगा। इसी लिये सारा पुरुषार्थ उनका इसी ओर लग गया। यह बात स्वयं उनके अपने लेखों से प्रतीत होती है।

षष्ठ प्रकरण

वेदों का गो-सम्बन्धी दृष्टिकोण

गाय के प्रति वेदों के दृष्टिकोण को यदि समझ लिया जावे तो आपको स्पष्ट हो जायेगा कि पाश्चात्य विद्वानों का मत केवल कल्पित और निराधार है।

सब से पहली बात यह है कि वेद में गाय को बार-बार अघ्न्या कहा गया है कि 'यह न मारे जाने वाली है'। अघ्न्या का अर्थ है—'न हन्तव्या'। यह ऋ० ४।५८।१०; १०४।४०; ७।६८।९; ८।६४।२,९; ९।९३।५; १०।८७।१६ में लिखा है। याम्क इसे निरुक्त ११।४।४३ में 'न मारे जाने वाली' मानता है। ऋ० १०।८७।१६ में आता है कि—'जो दुष्ट पुरुष के मांस वा घोड़े आदि जानवरों के मांस को खाता है वा गाय को मार कर दूध से वञ्चित करता है, अग्नि उसको मार देता है' ऋ० ६।६८ १ में गाय को मारना पाप कहा है।

न केवल ऋग्वेद में अपितु दूसरे वेदों में भी बहुत से मन्त्र आते हैं जिनमें गाय का मारना पाप बताया है। अ० ३।२८।१ ऋ० ८।६।२३ में किसी भी पशु को मारना रोका है। यजु: १३।४३ में 'गां मा हिंसीरदितिं विराजम्' गाय को मत मारो। ऋ० १।१६४।२७ में 'अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय' यह न मारे जाने वाली गाय हमारा सौभाग्य बढ़ावे।

यजु: ३०।१८ में 'अन्तकाय गोघातकम्'—गाय को मारने वाला मौत के मुख में जावे, ऐसा लिखा है।

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् । तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नो सो अवरीहा ।। अ० १।१६।४।।

अर्थ—हे पुरुष! यदि तू हमारी गाय वा घोड़े वा पुरुष को मारेगा, तो हम तुझे सीसे की गोली से मारेगें।

वेद में गाय का कितना आदर है, यह इस मन्त्र से पता चलता है—

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानां अमृतस्य । नाभिः । प्र नु वोचं चिकितुषं जनाय मा गां अनागां अदितिं वधिष्ट ।। ऋ० ८।१०२।१५ ।।

अर्थ—गाय रुद्र देवताओं की माता है, वसुओं की कन्या है, आदित्यों की भगिनी है, और अमृत-दूध का स्रोत है। इसलिये हे मनुष्यों तुम वेकसूर और गरीब न मारे जाने वाली गाय को मत मारो। अथर्व० ८।६।२३ में भी यह मन्त्र है—

य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः ।
गर्भान् खादन्ति केश वास्तानितो नाशयामसि ।।

अर्थ—हम उनका नाश कर देते हैं जो पका हुआ अथवा कच्चा मांस वा अण्डे को खाते हैं।

न केवल गाय का मारना रोका गया है, अपितु गाय का निरादर करना भी पाप समझा जाता है।

अ० १३।१।५६ का मन्त्र इस प्रकार है—

यश्च गां पदास्फुरति प्रत्यङ् सूर्यं च मेहति ।
तस्य वृश्चामि ते मूलं न च्छायां करवोऽपरम् ।।

अर्थ—जो मनुष्य गाय को पैर मारता है वा सूर्य की निन्दा करता है, वह समूल नष्ट हो जाता है, उसे कहीं आश्रय नहीं।

अ० ८।७।२५ में भी गाय को अवध्य बताया है। अ० ७।५।५ में यह मन्त्र आता है—

मुग्धा देवा उत शुनाऽयजन्तोत गोरङ्गैः पुरुधाऽयजन्त।
य इमं यज्ञं मनसा चिकेत प्रणो वोचस्तमिहेह ब्रवः॥

अर्थ—जो जन कुत्ते के मांस से यज्ञ करते हैं वा गाय के मांस से, उनका मूलनाश हो जाता है।

और देखिये—अ० १०।१०।८ में गाय का कितना लाभ बताया है—

गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु॥

अर्थ—गौओं, घोड़ों आदि पशुओं का मलमूत्र कृषि की उपज के लिये अत्युपयोगी है।

ऋ० १२।१।५ में कहा है कि—हमारे देश में दूध देने वाली गाय बहुत हों। इसी प्रकार यजुर्वेद में भी कई मन्त्र आते हैं। जैसे—यजुः १३।४३-४५। इनमें कहा है—'गा मा हिंसीः' ऐसे कई और मन्त्र भी बताये जा सकते हैं।

इस विषय में वेद राजा का कर्तव्य भी बताता है। अ० ५।१८।१ में आता है—'राजन्! तुझे देवताओं ने गाय खाने को नहीं दी'। यजुः ६।२२ में आता है—'राजन्! तू ऐसे नियम बना कि गाय और ब्राह्मण न मारे जावें'। यजुः १६।१६ में कहा है—'राजन् हमारी गाय, भेड़, बकरी और घोड़े की रक्षा कर, इन्हें कोई न मारे'।

अथर्व० ८।३।१६ में यह मन्त्र आता है—

विषं गवां यातुधाना भरन्तामा वृश्चन्त्यमदितये दुरेवाः।
परैणान् देवः सवितादददातु पराभगमोषधीनां जयन्ताम्॥

'हे राजन् ! यदि कोई दुष्ट गाय को मारे अथवा विष दे, तो उसे अपने राज्य से बाहर करदे'।

एक और मन्त्र में कहा है—'यदि कोई मनुष्य अपने घर में वा यज्ञ में गाय का मांस पकाता है तो वह मृत्यु के मुख में जावे'।

गाय का लाभ

प्राचीन काल से ही आर्य लोग गाय को बड़े आदर से देखते चले आये हैं। उनकी दृष्टि में गाय बहुत उपयोगी थी। वे गाय को धन समझते थे। गाय से वह दूध, घी, दही लेते थे, जो उत्तम भोजन समझा जाता था। वह बछड़े देती है और उसका मूत्र भी औषधी का काम देता है। बैल खेती में हल चलाने वा बोझा ढोने के काम आते हैं। घी को यज्ञ में हवि देते हैं। गाय वा बैल भैंस आदि के गोबर से खाद बनती है। चमड़ा भी काम आता है। गाय के मारने वा गोमांस खाने का तो सवाल ही नहीं, वह तो गाय को पूजनीय समझते थे। इस बात को स्वयं Macdonell अपनी पुस्तक Vedic Mythology में लिखता है—

"Among the domestic animals known to Rigveda, Cow occupies the chief place, cows were the chief form of wealth."

अर्थात्—ऋग्वेद में वर्णित जानवरों में सबसे अधिक उत्तम और लाभदायक गाय को माना है। गाय के धन को सर्वोत्तम माना जाता है।

एक और स्थान पर वह लिखता है—